समकालीन साहित्य और समाज

प्रधान संपादक
प्रो. इंदु वीरेंद्रा

संपादक
डॉ. आसिफ उमर

Scanned with OKEN Scanner

© संपादक

ISBN : 978-93-88011-51-8

प्रकाशक

साहित्य संचय

बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता,
सोनिया विहार, दिल्ली-110090
फोन नं. : 09871418244, 09136175560
ई-मेल - sahityasanchay@gmail.com
वेबसाइट - www.sahityasanchay.com

ब्रांच ऑफिस

ग्राम : बहुरार, पोस्ट : ददरी
थाना : नानपुर, जिला : सीतामढ़ी
पटना (बिहार)

नेपाल ऑफिस

राम निकुंज, पुतलीसड़क
काठमांडौ, नेपाल-44600
फोन नं. : 00977 9841205824

प्रथम संस्करण : 2019
कवर डिजाइन : प्रदीप कुमार

मूल्य : ₹ 200/- (भारत, नेपाल)
मूल्य : $ 7/- (अन्य देश)

SAMKALEEN SAHITYA AUR SAMAJ
EDITED by Prof. Indu Veerendra and Dr. Asif Umar

साहित्य संचय, बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता, सोनिया विहार, दिल्ली-110090 से **मनोज कुमार** द्वारा प्रकाशित तथा **श्रीबालाजी ऑफसेट,** दिल्ली द्वारा मुद्रित।

Scanned with OKEN Scanner

13. समकालीन हिंदी साहित्य में आदिवासी विस्थापन 110
विकल सिंह
14. भारतीय साहित्य और समाज में किन्नरों के बढ़ते कदम 119
मिलन बिश्नोई
15. समकालीन समाज और विष्णु प्रभाकर के उपन्यास 122
फिरोज आलम
16. समकालीन साहित्य में दिव्यांग-विमर्श 128
डॉ. वंदना
17. समकालीन हिंदी साहित्य में वृद्ध-विमर्श 136
डॉ. अजय कुमार
18. समकालीन महिला उपन्यास लेखन में चित्रित समाज 143
डॉ. चंदा सागर
19. बाल-साहित्य और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण 151
अनामिका रोहिल्ला
20. भारतीय संस्कृति : समकालीन चुनौतियाँ 156
डॉ. अंजली जोशी
21. 'जरूरत इसी की थी' बाल श्रमिकों की व्यथा-कथा 162
शाजिया बशीर
22. किसान-विमर्श 168
आम्रपाली कुमारी
23. प्रवासी हिंदी साहित्य की नींव व स्त्री रचनाकार 173
अमित कुमार गुप्ता

Scanned with OKEN Scanner

समकालीन समाज और विष्णु प्रभाकर के उपन्यास

फिरोज आलम
शोधार्थी
हिंदी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़
email : fzalam36@gmail.com

समाज युग-सापेक्ष होता है। युग बदलता है तो समाज भी बदलता है जिससे कि सामाजिक रहन-सहन, क्रियाकलाप, आचार-विचार तथा मानवीय मूल्य का बदलना भी लगभग तय हो जाता है। समाज जिन परिस्थितियों से होकर गुजरता है उनमें राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक-सांस्कृतिक आदि हैं जो समाज को प्रभावित करती हैं। जिसका प्रभाव व्यक्ति पर पड़ना स्वाभाविक है। व्यक्ति समाज का प्रमुख अंग है, एक स्वस्थ समाज का निर्माण व्यक्ति द्वारा ही संभव है, जो अपनी सक्रिय सकारात्मक भूमिका अदा करते हुए समाज को स्वस्थ बनाता है।

समकालीन समाज विभिन्न परिस्थितियों से गुजरता हुआ दिखाई देता है। समकालीन परिस्थितियों पर यदि विचार किया जाए तो एक बात अवश्य स्पष्ट लक्षित हो जाती है कि व्यक्ति आत्म केंद्रित होता जा रहा है और भोगवादी प्रवृत्तियाँ मानवीय मूल्य में निरंतर गिरावट ला रही हैं। परिणामस्वरूप 'संत्रास, 'कुंठा', 'तनाव', 'घुटन', 'घृणा', 'द्वेष', 'अलगाव', आदि भाव उत्पन्न हुए जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव समाज पर पड़ा। अकेलापन आधुनिक समाज की विडंबना है। लोगों में रागात्मकता का अभाव है। आपसी संबंधों में एक अजीब-सी खटास आ गई है। समाज में द्वेष तथा घृणा का भाव बढ़ते जा रहे हैं व्यक्ति अपने संस्कारों से दूर होता चला जा रहा है।

समाज को निश्चित दिशा देकर उसे चरमोत्कर्ष तक पहुँचाने में मानव-जाति का प्रमुख योगदान रहता है, परंतु वास्तव में जो प्रवृत्तियाँ जन्म ले रही हैं वो चिंताजनक ही कही जा सकती हैं। समाज को सही दिशा देने के लिए सकारात्मक सोच को होना बहुत जरूरी है, स्वाभाविक यह भी है कि युग बदलता है तो समाज

Scanned with OKEN Scanner